खण्ड-414, अंक-2
गुरुवार, 13 माघ, शक संवत् 1916
(2 फरवरी, 1995 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(बारहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 1995)

खण्ड 414 में 6 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)

1995

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उपस्थित सदस्य	क
विधान भवन गेट नं0-3 पर तैनात इन्सपेक्टर द्वारा विधायकों को रोकने तथा अपमानित किये जाने पर आपत्ति	1
विधान सभा के सदस्य श्री मनोहर लाल के निधन पर शोकोद्गार ..	1-5
विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य, श्री दया शंकर सिंह, श्री उमानाथ सिंह, श्री ज्वाला प्रसाद कुरील, श्री सूरज प्रसाद, श्री मुरलीधर कुरील, श्री मंगरे सिंह उर्फ सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री कृष्ण कुमार शुक्ल तथा श्री महावीर प्रसाद शुक्ल के निधन पर शोकोद्गार	5-12
भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति, श्री ज्ञानी जैल सिंह, पूर्व सांसद एवं समाजवादी नेता श्री मधुलिमये तथा गुजरात के पूर्व राज्यपाल श्री महीपाल सिंह शास्त्री के निधन पर शोकोद्गार	12-26

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बृहस्पतिवार, दिनांक 2 फरवरी, 1995

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :-

अजय प्रताप सिंह उर्फ लल्ला भइया, श्री	गोण्डा
अ0 रईस, श्री	सुल्तानपुर
अरविन्द प्रताप सिंह कुंवर, श्री	फर्रुखाबाद
अवनीश कुमार सिंह, श्री	बदायूं
उर्मिला देवी यादव, श्रीमती	मैनपुरी
ओंकार सिंह, श्री	एटा
काशी सिंह ऐरी, श्री	पिथौरागढ़
गजराज सिंह, श्री	गाजियाबाद
छब्बू पटेल, श्री	वाराणसी
जगदम्बिका पाल, श्री	बस्ती
जगवीर सिंह, श्री	अलीगढ़
जवाहर लाल दिवाकर, श्री	इलाहाबाद
जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भइया, श्री	गोरखपुर
निर्भय पाल शर्मा, श्री	सहारनपुर
प्रेम सिंह, श्री	गाजियाबाद
बरफिया लाल जुवांठा, श्री	उत्तरकाशी
बिहारी लाल आर्य, श्री	झांसी
महराज सिंह यादव, श्री	इटावा
रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भइया, कुंवर	प्रतापगढ़
राम औतार मिश्रा, श्री	शाहजहांपुर
राम जीत भारद्वाज, श्री	वाराणसी
राम सरन वर्मा, श्री	पीलीभीत
राम सेवक सिंह, श्री	बदायूं
श्रीराम पाल, श्री	जालौन
सुखदेव, श्री	आजमगढ़
हरिशंकर तिवारी, श्री	गोरखपुर
हरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

वृहस्पतिवार, दिनांक 2 फरवरी, 1995

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप लखनऊ में दिन के ।। बजे अध्यक्ष श्री धनीराम वर्मा की अध्यक्षता में आरम्भ हुई।)

विधान भवन गेट नं0 3 पर तैनात इन्सपेक्टर द्वारा विधायकों को रोकने तथा अपमानित किये जाने पर आपत्ति

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)-

अध्यक्ष महोदय, आज बड़े दुख के साथ.....

श्री राम आसरे वर्मा-

मान्यवर, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा जो निधन के निर्देश हैं उनके पहले, मुझे कहना तो नहीं चाहिये, लेकिन एक आर0पी0 त्रिपाठी, इन्सपेक्टर, जो गेट नं0 3 पर है, वह विधायकों का आना जाना तबाह कर रहे हैं। आप उसको वहां से तुरन्त हटवायें, नहीं तो परिणाम अच्छे नहीं होंगे। वह विधायकों को धक्के मार-मार कर उन्हें बाहर कर रहा है। (पुनः मुख्य मंत्री को बोलने का अवसर देने पर) इस पर पहले आप मान्यवर, व्यवस्था करवा दीजिये, फिर आगे चलिये।

श्री अध्यक्ष-

जो नियमित हो उसे आप करवा दें।

वर्तमान विधान सभा के सदस्य श्री मनोहर लाल के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)-

अध्यक्ष महोदय, दुख के साथ यह सदन को सूचित करना पड़ रहा है कि जो इस प्रदेश की और देश की और इस सदन की लगातार कई वर्षों तक सेवा करते रहे, उन मनोहर लाल का निधन हो गया है। स्वर्गीय मनोहर लाल गरीबों के लिये, पिछड़ों के लिये, दलितों, किसानों और मजदूरों के लिये सदैव लड़ाई लड़ते रहे और उनके हक के लिये संघर्ष करते रहे। उन्होंने कानपुर जनपद में ही नहीं पूरे प्रदेश में मजदूरों को इकट्ठा करने का काम किया था और मजदूरों के संगठन को संगठित करने का काम किया था। साथ ही उनके हितों के लिये काम किया था। राजनीतिज्ञ के साथ-साथ वह समाज सेवी थे और गरीबों के लिये उनके दिल में बहुत हमदर्दी थी। इस सदन में भी आप देखते हैं कि वह कितने मृदुभाषी थे और सदन में भी कभी-कभी खुशी का माहौल बनाने में भी आगे रहे थे। वह इस सदन के चार बार सदस्य रहे और लोकसभा के सदस्य रहे। चौधरी चरण सिंह के निकट साथी और सहयोगी रहने का लगातार उनको अवसर मिला। चौधरी चरण सिंह के मुख्य मंत्रित्वकाल में भी यह प्रदेश के राज्य मंत्री थे और हमारे साथ एक ज्येष्ठ मंत्री के रूप में वह काम कर रहे थे। हमारा उनका संघर्ष काल में बहुत लम्बे समय तक साथ रहा। आपातकाल में भी वह लगातार जेल में रहे। आज उनके

निधन से हमें और हमारे साथियों को महान दुख है ही, लेकिन प्रदेश के जो गरीब हैं, जो पिछड़े लोग हैं, जिनकी उन्होंने अपने व्यक्तित्व से और कार्यों से सेवा की, वे आज सारे के सारे दुखी हैं। हम आपके माध्यम से उनके परिवार तक, उनके संबंधियों तक और उनके शुभ चिन्तकों तक अपने दल की संवेदना को पहुंचाने की प्रार्थना करते हैं।

नेता विरोधी दल (श्री कल्याण सिंह)-

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय मनोहर लाल जी के निधन के संबंध में जो शोकोद्गार माननीय नेता, सदन ने व्यक्त किये हैं, मैं अपने को और अपने दल को उन शोकोद्गारों के साथ सम्बद्ध करता हूं। माननीय मनोहर लाल जी इस माननीय सदन के चार बार सदस्य निर्वाचित हुये। एक बार लोक सभा के सदस्य भी निर्वाचित हुये। वह जनता में बहुत ही लोकप्रिय व्यक्ति थे। धरती से जुड़े हुये एक कर्मठ कार्यकर्ता थे। जीवन भर उन्होंने दलितों के लिये, पिछड़ों के लिये, किसानों के लिये संघर्ष किया। ऐसा व्यक्तित्व जब बीच से उठता है तो निसन्देह उस प्रकार की हानि का भरा जाना अवश्य ही कठिन हो जाया करता है। उनके निधन से उत्तर प्रदेश ने एक बहुत अच्छा निस्वार्थी, समाजसेवी और एक अच्छा राजनेता खो दिया है। उनके निधन से मैं और मेरा दल दुखी है। आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी और मेरे दल की ओर से शोक सम्वेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

पंचायती राज मंत्री (श्री राम लखन वर्मा)-

माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष ने जो शोक सम्वेदनायें श्री मनोहर लाल जी के निधन के संबंध में व्यक्त की हैं, मैं अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। श्री मनोहर लाल जी इस सदन के सदस्य थे और कैबिनेट मंत्री थे, आज वह हमारे बीच नहीं हैं। मुझे भी उनके साथ काम करने का मौका मिला। पिछली दो बार भी वह मेरे साथ इस सदन के सदस्य रहे। वह इतने हसमुख थे कि कभी भी उनके चेहरे पर गुस्सा नाम की चीज नहीं दिखाई देती थी। उनके निधन से वर्तमान सरकार को ही ठेस नहीं पहुंची है बल्कि दलितों और पिछड़ों को भी ठेस पहुंची है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोकाकुल परिवार को मेरी व मेरे दल की तरफ से शोक सम्वेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री प्रमोद तिवारी-

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन ने, माननीय नेता विरोधी दल ने, माननीय नेता बसपा ने जो शोकोद्गार माननीय मनोहर लाल जी के लिये व्यक्त किये हैं, उनसे मैं अपने और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। काल के क्रूर हाथों से ऐसी बहुमुखी प्रतिभा का व्यक्तित्व हमसे छिन गया जिसकी कमी इस सदन में सर्वदा महसूस की जाती रहेगी। सहसा विश्वास नहीं होता कि अपना हसमुख चेहरा

लिये सदन के आवेश भरे छड़ों में चुटीली उक्तियों से सदन को सहज बनाने वाले, मेरे बगल में इधर बैठने वाले माननीय मनोहर लाल जी आज हमारे बीच नहीं रहे। उनका व्यक्तित्व एक समर्पित राजनेता, समाजसेवी कार्यकर्ता का था। जीवन भर वह संघर्ष करते रहे और जब कभी उन्हें प्रशासन में आने का मौका मिला तो उन्होंने विभागीय क्षमता का परिचय दिया। अपने संसदीय कौशल का परिचय उन्होंने पक्ष और विपक्ष दोनों में बैठकर दिया। इन सबके ऊपर वह एक बहुत ही अच्छे इन्सान, बहुत अच्छे दोस्त और बहुत ही गुणी व्यक्ति थे। मैं अपनी और अपने दल की ओर से हार्दिक संम्वेदनायें व्यक्त करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि मेरी और मेरे दल की भावनायें उनके शोक सन्तप्त परिवार और उनके हजारों लाखों प्रशंसकों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री किरन पाल सिंह -

माननीय अध्यक्ष जी, स्वर्गीय श्री मनोहर लाल जी के निधन पर जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता बसपा, माननीय नेता कांग्रेस ने व्यक्त किये हैं मान्यवर, मैं और मेरा दल, अपने को उससे सम्बद्ध करता है। मनोहर लाल जी से मेरा परिचय बहुत पुराना था या यह कहूं कि जब से मैं राजनीति में आया तब से मेरा और मनोहर लाल जी का परिचय था। उसका कारण यह था कि मनोहर लाल जी चौधरी चरण सिंह जी के अनुयायी थे और मेरी भी चौधरी चरण सिंह जी के चरणों में राजनीतिक शिक्षा-दीक्षा हुई। हम लोग सहपाठी थे और शुरू से साथ-साथ रहे। उनके साथ-साथ रहते यह विश्वास नहीं होता है कि उनकी मृत्यु हो गई है और वह हमारे साथ नहीं हैं। वह चार बार विधान सभा के सदस्य रहे और उन्नाव क्षेत्र से रहे यह भी उनकी लोकप्रेयता का मिसाल है कि वह एक क्षेत्र से चार बार चुने गये। वह लोक सभा के लिये भी चुने गये। मनोहर लाल जी खुद सम्पन्न घराने के होते हुये भी उनके दिल में गरीबों के प्रति प्यार का भाव था। वह गरीबों के हमदर्द थे। श्रीमन् सदन में कभी तनाव की स्थिति पैदा होती तो वह अपनी भाषा से सदन को तनाव रहित कर देते थे। सदन के बाहर और अन्दर मनोहर लाल जी की कमी सबको खलेगी। वह प्रदेश के नेता थे हमारे दल के अध्यक्ष भी वह रहे आज उनके निधन से प्रदेश ने एक सच्चा समाजसेवी और गांव में रहने वालों ने एक सच्चा हमदर्द नेता खो दिया है। वह सबके साथ मोहब्बत से और मित्रता से पेश आते थे आज हमने ऐसे व्यक्तित्व को खो दिया है। मैं व्यक्तिगत रूप से दुखी हूं मेरा दल दुखी है मैं और मेरा दल उनके प्रति शोक सम्वेदनायें व्यक्त करता है। हमारा आपसे निवेदन है कि स्वर्गीय मनोहर लाल जी के शोक संतप्त परिवार तक हमारी शोक सम्वेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री ऊदल-

मान्यवर, स्वर्गीय मनोहर लाल जी के निधन के संबंध में जो उद्गार माननीय नेता सदन ने माननीय नेता विरोधी दल ने तथा माननीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं मैं अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, माननीय मनोहर लाल जी की मृदु भाषा, जैसा कि माननीय नेता जनता दल ने कहा कभी सदन में तनाव होता था तो वह भाषा के सहारे तनाव को खत्म कर देते थे। दलितों को मजदूरों की सेवा जो उन्होंने की वह इतिहास में अमर रहेगी। उनके निधन से एक सच्चा समाज सेवी, दलितों का रहनुमा हमारे बीच से उठ गया है उसकी पूर्ति भी निकट भविष्य में नहीं होगी, मान्यवर, मैं आपसे निवेदन करता हूं कि हमारी शोक सम्वेदनायें उनके दुखी परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें और उनके जो इष्ट मित्र हैं उनको भी हमारी श्रद्धा के सुमन पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राम स्वरूप-

मान्यवर, स्व0 मनोहर लाल जी के विषय में जो सम्वेदना माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, नेता जनता दल और अन्य दलों के नेताओं ने व्यक्त की है उनसे मैं अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। स्व0 मनोहर लाल जी ने राजनीति में रहकर जो सेवायें पिछड़ों, दलितों, गरीबों के लिये की हैं उनके अलावा उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में भी बहुत काम किये हैं उनके लिये मैं दुख व्यक्त करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि आप मेरे और मेरे दल की सम्वेदना उनके परिवार और उनके इष्ट जनों तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अतीक अहमद-

मान्यवर, सदन ने स्वर्गीय मनोहर लाल जी के प्रति जो भावनायें व्यक्त की हैं मैं भी अपने निर्दलीय साथियों के साथ उन भावनाओं से सम्बद्ध करता हूं। यह सच है कि आज हम सबको उनकी कमी दलितों, पिछड़ों माइनारिटीज के हितैषी के रूप में बहुत खल रही है। यह तो जग जानता है कि उन्होंने सदैव दलितों के लिये पिछड़ों के लिये संघर्ष किया। यहां सदन के अन्दर व बाहर वह बराबर उनके हित के लिये प्रयत्नशील रहे। मेरी आपसे प्रार्थना है कि उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी भावनाओं को पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राम आसरे वर्मा-

मान्यवर, स्वर्गीय मनोहर लाल जी से मेरे व्यक्तिगत सम्बन्ध प्रगाढ़ थे इस नाते मैं भी इस अवसर पर उनके शोकाकुल परिवार तक संवेदना के दो शब्द पहुंचाना चाहता हूं। जहां वह दबे पिसे लोगों के प्रति समर्पित थे वहीं राजनीति और सामाजिक क्षेत्र में उनकी सेवायें स्मरणीय रहेंगी। उनके निधन से जो रिक्तता आयी है उसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। मैं अपनी ओर से विभिन्न दलों के नेताओं से

अपने को सम्बद्ध करते हुये शोक व्यक्त करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी ओर से भी उनके शोकाकुल परिवार तक सम्वेदना पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष-

स्वर्गीय मनोहर लाल जी इस सदन के सदस्य और सरकार में मंत्री थे। वह अब हमारे बीच में नहीं हैं। उनके निधन पर माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता बसपा, माननीय नेता कांग्रेस पार्टी, माननीय नेता मार्क्सवादी पार्टी और बहुत से अन्य साथियों ने जो शोकोद्गार व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुये यह कहना चाहता हूं कि स्वर्गीय मनोहर लाल जी दलितों, शोषितों, अल्पसंख्यकों और पिछड़ों के लिये आजीवन कार्य करते रहे। उनकी भलाई के लिये, उनके उत्थान के लिये उन्होंने हमेशा संघर्ष किया। सदन में भी समय-समय पर वह एक ऐसा वातावरण पैदा करते थे जिससे सभी आकर्षित होकर उनकी ओर देखते थे। और मनोरंजन का वातावरण पैदा होता था वह हमको हसा देते थे और स्वयं गम्भीर रहते थे। उन्होंने समाज और देश की जो सेवा की है वह अपने में अनूठी है। उन्होंने अल्पसंख्यकों, पिछड़ों और अन्य दबे-पिसे लोगों को आगे बढ़ाने के लिये जो कार्य किया है, आगे आने वाली पीढ़ी उससे मार्गदर्शन लेगी। आशा है कि अब भी हमारे देश में बहुत से ऐसे लोग हैं जो समाज के 95 प्रतिशत लोगों की सेवा में लगे हुये हैं और आगे आने वाली पीढ़ी भी इसमें हमेशा इस ओर आगे रहेगी, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी, यदि हम सभी शोषित, पीड़ित, पिछड़े और दबे-पिसे वर्ग की सेवा करते रहें। मैं सभी दलों के माननीय नेताओं और उनके दल की ओर से जो उन्होंने शोकोद्गार प्रकट किये हैं, वह उनके परिवारजनों तक भेज दूंगा। अब मैं चाहता हूं कि दो मिनट खड़े होकर मौन रखा जाय।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये सदन ने दो मिनट का मौन रखा।)

विधान सभा के भूतपूर्व सदस्य, श्री दया शंकर सिंह, श्री उमानाथ सिंह, श्री ज्वाला प्रसाद कुरील, श्री सूरज प्रसाद, श्री मुरलीधर कुरील, श्री मंगरे सिंह उर्फ सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री कृष्ण कुमार शुक्ल तथा श्री महावीर प्रसाद शुक्ल के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)-

मान्यवर, स्व0 श्री दया शंकर जी 1989 में इस सदन के सदस्य चुने गये थे। दया शंकर जी अपने जीवन के प्रारम्भ से ही समाजवादी विचारधारा से जुड़े रहे और डा0 राम मनोहर लोहिया और श्री जय प्रकाश नारायण के सच्चे अनुयायियों में से थे उन्होंने जीवन भर अपने विद्यार्थी जीवन से लेकर के लगातार समाज के कमजोर वर्गों के लिये संघर्ष किया और आखिरी दिनों में हमसे अलग होकर के भूतपूर्व प्रधान मंत्री श्री चन्द्र शेखर जी के निकट पहुंच गये थे। लेकिन लगातार वह जहां भी रहे, किसानों के लिये गरीबों के लिये और मजदूरों के लिये हमेशा संघर्ष करते रहे

और विभिन्न आन्दोलनों में जेल भी जाते रहे। इस सदन ने ऐसे नेता को खो दिया है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप उनके परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, स्वर्गीय उमानाथ सिंह जी भारतीय जनता पार्टी से जुड़े रहे और वह मिनिस्टर भी रहे और 4 बार इस विधान सभा के सदस्य रहे। वह कई सामाजिक संगठनों से जुड़े रहे और अनेक शिक्षण संस्थाओं से जुड़कर उन्होंने शिक्षा प्रसार के लिये बहुत सराहनीय काम किया। दल में वह कहीं रहे हों लेकिन मान्यवर, हमारे और उनके बहुत अच्छे संबंध भी थे। हमें अफसोस है कि आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। उनकी सेवाओं से यह सदन और प्रदेश वंचित रह गया। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार तक हमारी संवेदनायें भेजने की कृपा करें।

स्वर्गीय ज्वाला प्रसाद कुरील जो इस सदन के 3 बार सदस्य रहे और इस संदन के माध्यम से उन्होंने प्रदेश के गरीबों, दलितों की बड़ी सेवा की। वह 1977 में लोक सभा के सदस्य रहे और शिक्षा जगत में कानपुर जनपद की उन्होंने बड़ी सेवा की और वह स्वयं भी शिक्षक थे। आखिरी समय में हमारी पार्टी से भी वह जुड़े रहे और हमारे दल के सहयोगी रहे। आज वह हमारे बीच में नहीं हैं। कानपुर ने एक बहुत बड़े समाजसेवी नेता को खो दिया है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार तथा संबंधियों तक हमारी संवेदनाओं को भेजने की कृपा करें।

स्वर्गीय सूरज प्रसाद जी 1977 में इस सदन के सदस्य चुने गये और जीवन भर उन्होंने गरीबों, दलितों की सेवा की। कविता और शायरी का उनको बड़ा शौक था। मुझे भी कई मंचों पर उनकी कविता और शायरी सुनने का अक्सर मिलता रहा। वह जनपद शाहजहांपुर के दलितों और गरीबों तथा किसानों के बड़े नेता थे। उनके निधन से जनपद शाहजहांपुर ने गरीबों का नेता खो दिया है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार और संबंधियों तक हमारी तरफ से सदन के माध्यम से संवेदना भेजने की कृपा करें।

स्वर्गीय मुरली धर कुरील जी इस सदन के 3 बार सदस्य रहे और सामाजिक तथा शैक्षिक संस्थाओं से वह जुड़े रहे। उन्होंने जीवन भर समाज और गरीबों की सेवा की। जीवन भर वह गरीबों की बात करते रहे और उनके लिये संघर्ष करते रहे। दलितों के लिये उन्होंने बहुत काम किया। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारी तरफ से उनके परिवार तक संवेदना भेजने की कृपा करें।

स्वर्गीय मंगरे सिंह जी 1974 में इस सदन के सदस्य चुने गये। आरम्भ से वह राजनीति में हिस्सा लेते रहे। वह गोण्डा जनपद के एक कुशल राजनीतिज्ञ थे। आज उनके निधन से गोण्डा जनपद उनकी सेवाओं से वंचित रह गया है।

हम अपनी ओर से और इस सदन की ओर से आपसे प्रार्थना करते हैं कि उनके परिवार तक मेरी और इस सदन की शोक सम्वेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

स्वर्गीय कृष्ण कुमार शुक्ल 1980 में इस सदन के सदस्य चुने गये । वह कई सामाजिक और शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े रहे । उनकी इमानदारी की सभी लोग सराहना करते थे। उन्होंने सच्चे समाजसेवी के रूप में कार्य किया। मैं प्रार्थना करता हूं कि मेरी और इस सदन की शोक सम्वेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

स्वर्गीय महाबीर प्रसाद शुक्ल, 1952, 1957 में और 1962 में इस सदन के सदस्य रहे और 1962 से 1976 तक वह राज्य सभा के सदस्य रहे । उन्होंने सामाजिक जीवन में सराहनीय कार्य किया। 1957-1960 में डा0 सम्पूर्णानन्द जी के मंत्रि मण्डल में उप राजस्व मंत्री थे और वह एक बहुत बड़े स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उन्होंने कई बार आजादी की लड़ाई के लिये यातनायें सही हैं और जीवन भर समाज की कर्मठता से सेवा करते रहे हमारी आपसे प्रार्थना है कि आप मेरी ओर से और इस सदन की ओर से शोक सम्वेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

नेता विरोधी दल (श्री कल्याण सिंह)-

श्रीमन्, स्वर्गीय श्री दया शंकर सिंह, श्री उमानाथ सिंह, श्री ज्वाला प्रसाद कुरील, श्री सूरज प्रसाद, श्री मुरलीधर कुरील, श्री मंगरे सिंह उर्फ सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री कृष्ण कुमार शुक्ल और श्री महाबीर प्रसाद शुक्ल के निधन के संबंध में जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन ने व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन् यह सभी ऐसी हस्तियां थीं जो अपने अपने जनपदों में बहुत ही लोकप्रिय थीं। सभी ने निष्ठा भाव से सार्वजनिक क्षेत्र में काम किया है और उनकी मृत्यु से जो उनके स्थान पर रिक्तता आयी है, उसको भर सकना कठिन है।

स्वर्गीय दया शंकर सिंह जी, निश्चित रूप से समाज में विषमता के विरुद्ध लड़ाई लड़ते रहे। उन्होंने जय प्रकाश नारायण जी के आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई है। उनके देहावसान से वाराणसी जनपद ने एक कर्मठ समाजसेवी खो दिया है।

स्व0 उमानाथ सिंह कई बार इस सदन के सदस्य रहे। वह अनेक पदों पर रहे । भारतीय जनता पार्टी की जब सरकार थी, तो उन्होंने राज्य मंत्री के रूप में मेरे सहयोगी के रूप में भी कार्य किया । नैतिक मूल्यों की राजनीति में उन्होंने सदैव विश्वास किया है और अपने व्यवहार से अपने को अजातु शत्रु बना लिया था। उनके विरोधी भी उनका सम्मान करते थे। शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्होंने अपना पूरा योगदान दिया है, जिसको जनपद जौनपुर याद रखेगा। आज उनके उठ जाने से जनपद जौनपुर की क्षति तो हुई ही है मैं उसे प्रदेश की क्षति मानता हूं। वह मेरे दल के सदस्य थे, इसलिये भाजपा को करारा धक्का लगा है।

स्वर्गीय ज्वाला प्रसाद कुरील तीन बार इस सदन के सदस्य हुये। उनके उठ जाने से जनपद कानपुर ने एक समाजवादी खो दिया है। वह बहुत ही व्यवहार कुशल थे। श्री मंगरे तीन बार इस सदन के सदस्य रहे। वह बहुत ही लोकप्रिय थे। एक कर्मठ और निःस्वार्थ कार्यकर्ता के रूप में लोगों के लिये एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके उठ जाने से कानपुर ने एक निःस्वार्थ, समाजसेवी खो दिया।

श्रीमन्, श्री मंगरे सिंह, उनका अपहरण हुआ, उसके पश्चात् उनकी दुखद हत्या कर दी गई। हम सब लोगों के लिये यह गहरी चिन्ता का विषय है। वह अपने क्षेत्र में बहुत लोकप्रिय थे, बहुत सक्रिय थे, सदैव उन्होंने गरीबों और किसानों के हित की लड़ाई लड़ी। उनके उठ जाने से गोंडा-जनपद ने एक बहुत अच्छा समाजसेवी खो दिया है।

श्रीमन्, श्री कृष्ण कुमार शुक्ल जी, यह भी एक अच्छे कार्यकर्ता अपने जनपद के अच्छे नेता थे। उनके निधन से रायबरेली जिले ने एक अच्छा समाजसेवी खो दिया है।

श्रीमन् यह जो दिवंगत आत्मायें हैं उनके प्रति सम्मान के साथ मैं और मेरा दल श्रद्धांजलि अर्पित करता है। और आपसे मेरी प्रार्थना है कि कृपा करके इन दिवंगत आत्माओं के शोकाकुल परिवारों तक हमारी शोक सम्वेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

पंचायती राज मंत्री (श्री राम लखन वर्मा)-

श्रीमन्, प्रथम विधान सभा सदस्य स्वर्गीय श्री दया शंकर सिंह, पूर्व विधान सभा सदस्य स्वर्गीय उमानाथ सिंह, पूर्व विधान सभा सदस्य, स्वर्गीय ज्वाला प्रसाद कुरील, पूर्व विधान सभा सदस्य स्वर्गीय सूरज प्रसाद जी, स्वर्गीय श्री मुरली धर कुरील जी, स्वर्गीय श्री मंगरे सिंह जी, स्वर्गीय श्री कृष्ण कुमार शुक्ल, स्वर्गीय श्री महाबीर प्रसाद शुक्ल जी के सम्बन्ध में जो शोक सम्वेदनायें माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधीपक्ष ने जाहिर की हैं मैं अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन् इसके साथ ही साथ आपसे मेरी और मेरे दल की तरफ से प्रार्थना है कि स्वर्गीय माननीय सदस्यों के शोकाकुल परिवारों तक संदेश भेजने की कृपा करें।

श्री प्रमोद तिवारी-

माननीय अध्यक्ष जी, इन भूतपूर्व सदस्यों के निधन पर जो विचार सम्मानित नेता सदन, सम्मानित नेता विरोधी दल, सम्मानित नेता बसपा ने रखे हैं मैं उनसे अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। माननीय स्वर्गीय दयाशंकर जी के निधन से वाराणसी जिले के एक समाजसेवी विचारधारा के पोषक का अन्त हो गया। माननीय उमानाथ सिंह जी का जिक्र जब आता है तो एक सौम्य व्यक्तित्व, एक मिलनसार और एक ऐसा चेहरा हमारी नजरों के सामने आता है जिसमें मानवता कूट-कूट भरी थी, वह बहुत ही सरल इन्सान थे। उनके निधन से जौनपुर और उसके समीपवर्ती अंचल का एक कुशल समाजसेवी खो गया।

मान्यवर, माननीय ज्वाला प्रसाद जी कुरील के निधन से हमने कानपुर के लिये एक ऐसा समाजवादी खो दिया है जिसने किसान परिवार में जन्म लेकर दलित सेवा के लिये कुछ उठा नहीं रखा। मान्यवर, सूरज प्रसाद जी के निधन से शाहजहांपुर जिले के एक समाजसेवी व्यक्तित्व को हमने खो दिया है। मान्यवर, श्री मुरलीधर कुरील जी के निधन से हमने फिर कांग्रेस के एक समर्पित कार्यकर्ता और तमाम शिक्षण संस्थाओं से जुड़े एक समर्पित साथी को खो दिया है। श्री मंगरे सिंह उर्फ सुरेन्द्र प्रताप सिंह का निधन जिन परिस्थितियों में हुआ, वह अत्यन्त ही दुखद है। जिन परिस्थितियों में, ऐसी वेदनामयी परिस्थिति में मृत्यु हुई है, जिसकी जितनी सम्वेदना व्यक्त की जाय कम है। उनके निधन से गोण्डा जनपद ने एक अनुभवी समाजसेवी खो दिया है।

मान्यवर, कृष्ण कुमार शुक्ल जी 1980 में हमारे साथ इस सम्मानित सदन के सदस्य रहे। वे बहुत ही सौम्य, सरल और सीधे थे। मान्यवर, वे साथियों को मानने वाले साथी थे, वे सहकारिता के लिये समर्पित रहे। उन्होंने अपने जीवन में सदैव गरीबों के लिये कार्य किया। उनके निधन से निश्चित रूप से बहुत ही समर्तिपत व्यक्ति हमने खो दिया है।

मान्यवर, महाबीर प्रसाद शुक्ल जी के निधन से एक ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और समाज सेवी का अन्त हो गया जो पं0 नेहरू जी और लाल बहादुर शास्त्री जी के प्रति समर्पित रहे।

मान्यवर, मेरा आपसे अनुरोध है कि मेरी और मेरे दल की संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री किरन पाल सिंह-

मान्यवर, माननीय सदन के भूतपूर्व सदस्यों श्री दया शंकर जी, श्री उमा नाथ जी, श्री ज्वाला प्रसाद कुरील जी, श्री सरजू प्रसाद जी, श्री मुरली धर कुरील जी, श्री मंगरे सिंह जी, श्री कृष्ण कुमार शुक्ल जी, श्री महाबीर प्रसाद शुक्ल जी के निधन पर मान्यवर, जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष ने रखा है, माननीय नेता बसपा और माननीय नेता कांग्रेस दल ने विचार रखे हैं, मैं और मेरा दल उन विचारों से अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। यह सभी विभूतियां इस सदन के सदस्य रहीं। अपने सदन के कार्यकाल में और उसके पहले भी उन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में अपने-अपने जनपदों में समाज सेवा की, गरीब लोगों के सुखदुख को सुना, मान्यवर, इन सभी के निधन पर मैं और मेरा दल दुखी है। मेरा विनम्र आग्रह है कि आप इन सभी पूर्व सदस्यों के शोक संतप्त परिवार तक मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें भेजने का कष्ट करें।

श्री ऊदल-

मान्यवर, माननीय दया शंकर सिंह जी मेरे वाराणसी जिले के थे वे एक बहुत ही कर्मठ कार्यकर्ता थे और निधन के पूर्व भी वे हमेशा समाजिक कार्यों में रुचि लेते रहे और बहुत सी शिक्षण संस्थाओं से जुड़े रहे। उनके निधन से वाराणसी जिले में

और उसके आस पास के जिलों में एक बहुत बड़ी रिक्तता आ गयी है जिसको पूरा कर पाना सम्भव नहीं है। मान्यवर, मैं अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से स्व0 दया शंकर सिंह जी के प्रति शोक व्यक्त करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि उनके दुखी परिवारजनों तक और खासकर उनके जो भ्राता माननीय चन्द्रशेखर सिंह जी हैं, उन तक हमारी शोक संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

दूसरे माननीय उमा नाथ सिंह जी हमारे क्षेत्र, जिस क्षेत्र से मैं चुनाव लड़ता हूं, से सटा हुआ उनका क्षेत्र था। वहां बगल के क्षेत्र जौनपुर से वे हमेशा चुनाव लड़ते थे और चार बार चुनाव भी जीते थे। मान्यवर, उनके हमारे सम्बन्ध बहुत ही घरेलू थे और हमेशा दोनों के घरेलू कार्यों में हम एक दूसरे के सहयोगी रहे हैं। मान्यवर, पिछली बार जब हम बीमार थे, वे मंत्री थे तो मुझे देखने के लिये कबीर चौराहा हास्पिटल में उतरे थे, वे बहुत ही मृदुभाषी थे। वे तमाम शिक्षण संस्थाओं से जुड़े हुये थे उनकी रुचि शिक्षा के क्षेत्र में बहुत बड़ी थी। जौनपुर डी0डी0 कालेज में वे वर्षों से मैनेजर थे। और उसका संचालन भी बहुत अच्छी तरह से किया। उनके निधन से पूर्वांचल का बहुत बड़ा अहित हुआ है। उनकी आस्था भारतीय जनता पार्टी से हमेशा से जुड़ी रही और उनके निधन से भारतीय जनता पार्टी को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके शोकाकुल परिवार को एवं डिग्री कालेज की प्रिंसिपल और मैनेजर को और भारतीय जनता पार्टी को अपनी संवेदनायें व्यक्त करता हूं। आपसे निवेदन है कि कृपया मेरी श्रद्धांजलि उन तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, श्री सूरज प्रसाद जी का निधन हो गया है। सूरज प्रसाद जी बहुत ही अच्छे कार्यकर्ता थे और जनता के प्रति हमेशा से उनके दुख में सहायक रहे। उनके निधन से एक राजनीतिक कार्यकर्ता खो गया है। वे समाज सेवा के प्रति समर्पित थे उनके उठ जाने से उनकी पूर्ति नहीं हो सकेगी। इसलिये मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, श्री मुरली धर कुरील का निधन हो गया है। यह बहुत ही अच्छे कार्यकर्ता थे और कानपुर में बहुत सी शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े थे। मेरा उनसे व्यक्तिगत संबंध रहा। उनके निधन से कानपुर को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। उनके उठ जाने से गरीबों, दलितों और पिछड़ों का बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। इसलिये मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, श्री कृष्ण कुमार शुक्ल यह रायबरेली के बहुत ही पुराने कर्मठ कार्यकर्ता थे और आजादी की लड़ाई में उन्होंने भाग लिया। उनके निधन से रायबरेली का बड़ा नुकसान हुआ है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। मेरा आपसे निवेदन है कि मेरी और मेरे दल की संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, श्री महाबीर प्रसाद शुक्ल इलाहाबाद से कांग्रेस के समर्पित कार्यकर्ता थे और आजादी की लड़ाई में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा । इनके निधन ने बहुत ही महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी खो दिया है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है । अतः आपसे निवेदन है कि मेरी तथा मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्री राम स्वरूप-

मान्यवर, भूतपूर्व विधान सभा सदस्यों के बारे में जो शोक संवेदनायें नेता सदन, नेता विपक्षी दल, नेता बसपा, नेता कांग्रेस, नेता जनता दल, नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, ने रखी है उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं । मान्यवर, श्री दया शंकर सिंह, श्री उमानाथ सिंह, श्री सरजू प्रसाद, श्री कृष्ण कुमार शुक्ल जी, श्री मुरलीधर कुरील एवं श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह जी ने समाज की बड़ी सेवायें की उनके निधन से मुझे बड़ा दुख है । साथ ही आपसे यह भी उम्मीद करता हूं कि आप मेरे दल और मेरी ओर से शोक संवेदनायें उनके परिवारों तक भिजवाने की कृपा करें ।

श्री अतीक अहमद-

मान्यवर, उत्तर प्रदेश विधान सभा के पूर्व सदस्यों स्वर्गीय श्री दया शंकर सिंह, स्वर्गीय श्री उमानाथ सिंह, स्वर्गीय श्री ज्वाला प्रसाद कुरील, स्वर्गीय श्री सूरज प्रसाद, स्वर्गीय श्री मुरलीधर जी, स्वर्गीय श्री मंगरे सिंह उर्फ सुरेन्द्र प्रताप सिंह, स्वर्गीय श्री कृष्ण कुमार शुक्ल, स्वर्गीय श्री महावीर प्रसाद शुक्ल जी के निधन के अवसर पर इस सदन ने जो भावनायें व्यक्त की हैं, मैं उनसे अपने आपको सम्बद्ध करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोकाकुल परिवारों को मेरी संवेदनायें भिजवा दें ।

श्री अध्यक्ष-

स्वर्गीय श्री दया शंकर सिंह जी, स्वर्गीय श्री उमानाथ सिंह जी, स्वर्गीय श्री ज्वाला प्रसाद कुरील जी, स्वर्गीय श्री सूरज प्रसाद जी, स्वर्गीय श्री मुरलीधर जी, स्वर्गीय श्री मंगरे सिंह उर्फ सुरेन्द्र प्रताप सिंह जी, स्वर्गीय श्री कृष्ण कुमार शुक्ल जी, स्वर्गीय श्री महाबीर प्रसाद शुक्ल जी के प्रति माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता कांग्रेस पार्टी, माननीय नेता जनता दल, माननीय नेता बहुजन समाज पार्टी, माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी, माननीय नेता भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी-(मार्क्सवादी) और माननीय नेता निर्दलीय सदस्यगण ने जो भावनायें और विचार व्यक्त किये, मैं उनसे अपने को सम्बद्ध करते हुये अगली कड़ी में यह कहना चाहता हूं कि उनके कृतित्व और व्यक्तित्व से देश और समाज को बहुत लाभ हुआ है । हालांकि यह महान विभूतियां अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके कार्य, जो उन्होंने समाज के लिये देश के लिये किये, सदैव आदर्श के रूप में हमारे लिये प्रेरणादायक रहेंगे । निश्चित तौर पर यह महान विभूतियां जो इस सदन और उस सदन के सदस्य के रूप में रही हैं, उन्होंने समाज में बढ़चढ़कर काम किया है, तभी समाज ने उन्हें यह

उच्च स्थान प्राप्त करने का गौरव प्रदान किया । हालांकि व्यक्ति नहीं रहता है, लेकिन उसके विचार और कृतित्व समाज के सामने हमेशा रहते हैं और कुछ कार्य ऐसे हुआ करते हैं जिनकी प्रेरणा लेकर बहुत से लोग उनके अनुयायी हो जाते हैं और उनके कार्य को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं । मैं और अधिक न कह कर इतना ही कहूंगा कि हम सब लोग उन महान विभूतियों के कृतित्व और व्यक्तित्व से प्रेरणा लेकर समाज को आगे बढ़ाने का प्रयास करें । देश को आगे बढ़ाने का कार्य करें । अन्त में आप सब माननीय नेताओं के विचारों को अपने विचारों के साथ उनके परिवारजनों तक पहुंचाने का कार्य करूंगा और ईश्वर से यह प्रार्थना करता हूं कि उन दिवंगत आत्माओं के प्रति शाश्वत शान्ति और उनके परिवारजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करें । अब हम सब दो मिनट का मौन रखकर उनकी आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना करेंगे ।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये सदन ने दो मिनट का मौन रखा ।)

भारत के पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह, पूर्व सांसद एवं समाजवादी नेता श्री मधु लिमये तथा गुजरात के पूर्व राज्यपाल श्री महीपाल सिंह शास्त्री के निधन पर शोकोद्गार

मुख्य मंत्री (श्री मुलायम सिंह यादव)-

अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री ज्ञानी जैल सिंह जी के निधन की सूचना देते हुये महान दुख है । स्व0 ज्ञानी जैल सिंह जी ने जीवन के प्रारम्भिक दिनों से ही एक दृढ़ संकल्प किया था कि इस देश के लिये हर कुर्बानी करूंगा और इसीलिये उन्होंने आजादी की लड़ाई में अपनी जवानी के दिन गुजारे और अपनी कर्मठता और इमानदारी के बल बूते पर कांग्रेस पार्टी में एक बहुत बड़ा स्थान बना लिया था । पंजाब कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा पंजाब प्रदेश के मुख्य मंत्री, भारत सरकार के गृह मंत्री और फिर हमारे देश के जितने भी राष्ट्रपति हुये हैं, उन राष्ट्रपतियों में सबसे महान राष्ट्रपति हुये । वह गरीबों के दुख दर्द को कभी नहीं भूले और हमेशा ग़रीबों से जुड़े रहे । स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह सादगी के प्रतीक थे, उनके मन में कोई गुरूर नहीं था, वह हमेशा गरीबों के बारे में सोचते रहते थे, भारतीय भाषाओं के प्रबल समर्थक थे और अंग्रेजी के बहुत विरोधी । हमने जब अंग्रेजी हटाओ अभियान छेड़ा था उस समय देश के बहुत से लोग साथ देने को तैयार नहीं थे । हमारी प्रार्थना पर वह हमारे साथ इन्दौर गये और भारतीय भाषाओं की तरक्की के लिये उन्होंने हमारा निमंत्रण स्वीकार किया और इन्दौर में जो भाषण दिया वह पूरे देश के लिये एक संदेश था । भारतीय भाषाओं की तरक्की के लिये उनका एक संकल्प था इसलिये स्वास्थ्य खराब होते हुये भी हिन्दी भाषा के समर्थन में दिल्ली की सड़क पर आकर बैठ गये उन्होंने यह कभी नहीं सोचा कि वह राष्ट्रपति पद पर रह चुके हैं । उन्होंने पूरे देश को सन्देश दिया कि इस संघर्ष में सभी शामिल हैं । वह देशभक्ति से बहुत ओतप्रोत थे । उन्होंने कई मौकों पर हमें मार्गदर्शक के रूप में

प्रेरणा देने का काम किया। निधन के पूर्व । दिसम्बर को दुर्घटना हुई तो उन्हें चण्डीगढ़ में देखने का मौका मिला था लेकिन डाक्टरों की राय थी कि आप उनके परिवार से मिल लीजिये, उनके सामने जाने से वह भावुक हो सकते हैं इसलिये उनसे बातचीत करने से वंचित रह गया मुझे यह अफसोस रहेगा कि अन्तिम समय हम उनके पास नहीं पहुंच सके ।. डाक्टरों की राय की वजह से हम उनसे मिल नहीं सके । 1980 से लगातार हम उनके सम्पर्क में रहे। जब वह गृह मंत्री के रूप में कार्य कर रहे थे तो उस समय प्रदेश की कुछ समस्याओं के संबंध में उनसे मिलने का मौका मिला। उस समय उन्होंने जो बातें कहीं थीं मैंने उसी दिन समझ लिया था कि वह देश के बारे में कितने चिन्तित हैं और धरती से जुड़े हुये नेताओं में से हैं। गरीबी के उन्मूलन तथा भाईचारा बनाये रखने के लिये वह हमेशा संघर्ष करते रहे। वह कभी इन कामों के लिये चूके नहीं। हमेशा अगुवाई करते रहे। अपने संदेशों और अपने भाषणों के माध्यम से काम करते रहे। आज हमने एक महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व महान सपूत खो दिया है। आज वह हमारे बीच नहीं रहे। उनके निधन से हमें व्यक्तिगत भी हानि हुई है। यह देश के बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि कई मौकों पर हमने कुछ निर्णय लिये थे और कई मौकों पर उन्होंने मुझे राय भी दी थी जो हमारे राजनैतिक जीवन के लिये बहुत महत्वपूर्ण थीं। आज हम सभी देशवासी बहुत दुखी हैं। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि इस सदन की भावना, हमारी व हमारे दल की भावना, उनके शोकाकुल परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष-

तीन विशिष्ट व्यक्तियों को एक साथ ले लें।

श्री मुलायम सिंह यादव-

श्रीमन् जहां तक स्वर्गीय मधुलिमये जी का सवाल है वह हमारे देश के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। उनके बारे में हमारे तमाम साथी यहां ऐसे बैठे हैं, जो उनके बारे में बेहतर जानते हैं और उनके सम्पर्क में रहे हैं। हम विद्यार्थी जीवन से ही उनके साथ जुड़े हुये थे। 1960 में जब हम विद्यार्थी थे, उसी समय उनके सम्पर्क में आ गये थे। जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस समाजवादी पार्टी में कई लोग कार्य कर रहे थे, उन नेताओं में श्री मधुलिमये जी भी अपने विद्यार्थी जीवन से ही कार्य करना शुरू कर दिये थे। और राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद गये थे। तब से लेकर लगातार वह समाजवादी विचारधारा को फैलाने के लिये भरसक प्रयास करते रहे। वह लोक सभा में चार बार चुने गये। चार बार चुनना उतना महत्वपूर्ण नहीं है लेकिन लोक सभा में जाकर उन्होंने जो देश की समस्यायें थीं, कैसे देश खुशहाल हो, शक्तिशाली हो, ये सवाल तो उठाये ही लेकिन जिस तरह से संसदीय प्रणाली का

पालन और संविधान का ज्ञान का परिचय दिया उससे साबित कर दिया कि विश्व की संसदीय प्रणाली के वह महान नायक थे। आज मुझे कहने में कोई संकोच नहीं है कि डा0 राम मनोहर लोहिया के निधन के बाद समाजवादियों के मधुलिमये मुखिया रहे। हमारा उनसे निकट का संबंध था वह हमारे नेता भी थे। हमने उनके नेतृत्व में लगातार काम किया और 15 दिन या महीने में उनसे सम्पर्क रखते थे उनसे हमारा निजी संबंध था। 1990 में लोहिया ट्रस्ट का उद्घाटन हमको कराना था उस समय उनका स्वास्थ्य खराब था लेकिन उन्होंने हमारा अनुरोध टाला नहीं।

अभी 21 अक्तूबर को उन्होंने अपने हाथ से हमें पत्र लिखा कि पुस्तकों पर हमारे यहां कर लगा हुआ है उसे आप तुरन्त समाप्त कर दें हमने उनके पत्र को प्राप्त करते ही तुरन्त पुस्तकों पर से कर समाप्त कर दिया। मान्यवर, निजी तौर पर हम कहां गलती कर रहे हैं, कहां कुछ और करना चाहिये इस संबंध में वह बहुत चिंतित रहते थे। अभी दो तीन महीने उनके निधन से पहले हम उनसे मिलने गये तो उन्होंने कहा कि हम अकेले दो घंटा आपसे बात करना चाहते हैं इस देश के बारे में मुझे आप अलग कहीं लेकर चलें जहां टेलीफोन भी न हो, हम अकेले बात करना चाहते हैं। हम दूसरी बार गये हमने कहा यहीं पर बात कर लें और एक घंटा बात हुई और बहुत ही अच्छी बातें उन्होंने देश के बारे में बतायीं। मेरा दुर्भाग्य था दुबारा जो तय हुआ था और कुछ बात करने के लिये लेकिन दुबारा भेंट नहीं हो पायी। अंतिम समय पर सूचना मिलते ही हम वहां पहुंच गये थे। लेकिन हमारे वहां पहुंचने के आधा घंटा 40 मिनट बाद उनके निधन की सूचना मिल गई और उनसे जीवित नहीं मिल पाये।

मान्यवर, गोवा की आजादी का जो इतिहास है उसमें उनका सक्रिय योगदान रहा। उस इतिहास में जिस तरह से पुर्तगालियों ने गोवा को मुक्ति आंदोलन में लगे लोगों के साथ, जो अत्याचार और हत्यायें की उस संघर्ष में मधुलिमये, डा0 राम मनोहर लोहिया संघर्षरत थे। बहुत से लोग डरे हुये थे। उन्होंने इस बात की परवाह नहीं की जब वह बम्बई से चले गये तो यह सोच लिया कि हम जिंदा नहीं लौटेंगे। तो 12 साल की उन्हें सजा हुई थी। यह हमारे देश का सौभाग्य था कि मधुलिमये जी किसी तरह बच गये जब कि बहुत से लोगों की पुर्तगालियों ने हत्या कर दी थी लेकिन 12 साल की सजा हुई, 19, 20 महीना जेल में रहना पड़ा और बाद में जब गोवा आजाद हुआ तब वह जेल से छूटे। दलितों पिछड़ों को ऊंचा उठाने के लिये जब डा0 राम मनोहर लोहिया सवाल उठाते थे सबसे ज्यादा समर्थन उसके यही मधुलिमये जी करते थे और आखिरी समय तक इसके लिये वह काम करते रहे। इस देश के गरीबों, दलितों, पिछड़ों के लिये उन्होंने केवल बोला ही नहीं, लिखा ही नहीं बल्कि उसमें अमल भी किया। माननीय जय प्रकाश नारायण, आचार्य नरेन्द्र देव, डा0 राम मनोहर लोहिया, चौधरी चरण सिंह के साथ उन्होंने न केवल काम ही किया बल्कि उनके साथ पदाधिकारी रह कर काम किया और जब

चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय अध्यक्ष थे तो वह राष्ट्रीय महामंत्री थे। हमें याद है 1977 में उन्होंने विदेश मंत्री बनाने का आग्रह किया गया था तो उन्होंने इन्कार कर दिया था और कहा था कि हम मंत्री पद पर नहीं जायेंगे। मुझे याद है जब चौधरी चरण सिंह साहेब ने उन्हें बुलाकर कहा कि आपको राज्यसभा में जाना है, तो भी उन्होंने मना कर दिया था। उसके बाद चौधरी साहेब ने उनका हाथ पकड़कर कहा कि आज मुझे पता चला है कि इस देश में आप जैसे लोग नहीं हैं। मुझे याद है कि जब चौधरी साहब ने उनके प्रति एक टिप्पणी किया था तो मधुलिमये जी ने पत्र लिखा था और चौधरी साहब ने कहा कि अब मुझे सच्चाई का पता चला है। तो चौधरी साहब मुझे लेकर मधुलिमये जी के घर गये थे और फिर उनसे लम्बी बात हुई थी। तब दोनों नेताओं ने अपनी गलतफहमी को दूर किया था। तो ऐसे महान नेता देश को बहुत कम मिलते हैं। आज हमारे समाजवादी विचारधारा के जितने लोग हैं उन्हें मधुलिमये जी के निधन से अपार क्षति हुई है।

मधुलिमये जी एक उच्च कोटि के विचारक, विद्वान एवं लेखक थे। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने देश के बारे में कई लेख लिखे हैं। आपने समाचार पत्रों में पढ़ा होगा कि उनके निधन से एक ही दिन पहले उन्होंने कहा था कि हमारा लेख 9 तारीख को छपना चाहिये, तो उसी दिन उनका निधन हुआ और उसी दिन उनका लेख भी छपा था। वह साम्प्रदायिक सद्भाव को मजबूत करने के लिये बहुत चिन्तित रहते थे। मुझे फक्र है कि उन्होंने जो पुस्तकें लिखी हैं उनमें हमारा भी थोड़ा बहुत जिक्र किया है। इसके लिये हमने उनसे कहा कि मेरा नाम क्यों किताब में जोड़ दिया तो उन्होंने कहा कि यह जरूरी है, और बिना इसके हमारी बात पूरी नहीं हो सकती थी, इसलिये आपका नाम जोड़ा है। जो राजनीतिक घटनायें हुई हैं उनको देखते हुये आपका नाम जोड़ा है। निजी तौर पर वह हमारे नेता और हमारे मार्गदर्शक थे। साम्प्रदायिक सद्भाव कायम करने के लिये आखिरी दिनों में उन्होंने हमसे बहुत कुछ कहा, इसलिये हम कोशिश करेंगे कि जो बात उन्होंने अन्तिम क्षणों में हमसे कही है मैं अपने साथियों से भी कहूंगा कि उनकी बातों को बचाने का प्रयास करेंगे और उनका पालन करेंगे। हम आज स्वीकार करते हैं कि आज हिन्दुस्तान में इस तरह के विद्वान, समाजवादी विचारधारा के महान चिन्तक और देश को तथा देश के प्रधानमंत्रियों को मार्गदर्शन देने वाले ऐसे महान नेता आज हमारे बीच में नहीं हैं जिससे हम सभी को अपार क्षति हुई है।

आज जो उनका सपना था हिन्दुस्तान मजबूत और खुशहाल बने जो उस सपने को पूरा करने के लिये हम सभी को संकल्प लेना है कि इसे कैसे पूरा करेंगे? हम इस राय से आज से नहीं बल्कि बहुत पहले से इसके प्रबल समर्थक हैं। उनका कहना था कि हमारा देश लंका, पाकिस्तान, बंगलादेश का महासंघ बने और इसके लिये जनता को तैयार करें। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि इन तीनों देशों का ही नहीं बल्कि दुनिया के तमाम देशों को इकट्ठा करके यह काम करना चाहिये। इस

भावना के पीछे उनका सपना था कि हमारा देश शक्तिशाली खुशहाल बने साम्प्रदायिक सद्भाव की भावना दुनिया के अन्य देशों में आदर्श बने। यह उनकी कल्पना और इच्छा थी। ऐसे महान नेता आज हमारे देश से उठ गया है जिसका हम सभी को महान दुख है। उन्होंने पिछड़े, असहाय और दलितों को ऊपर उठाने का महान कार्य किया है जिसका परिणाम है आज हमारे देश में मंडल आयोग से गरीबों को उन्नति के विशेष अवसर मिले हैं। उसमें बहुत बड़ा योगदान मधुलिमये जी का था। आज हिन्दुस्तान में जो गरीब और मजदूर हैं और बम्बई से पूना तक जो मजदूर संगठन है, उन्हें उन्होंने एक नई दिशा दी थी और मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने का उन्होंने अद्वितीय कार्य किया था। इस संबंध में उन्होंने जो पुस्तक लिखी थी, जो नीति बनाई थी और जो कुछ कहा गया था, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। उन्होंने उसमें लिखा था, विचार किया था कि हिन्दुस्तान के साथ दुनियां के मजदूरों को कैसे इकट्ठा किया जा सकता है और देश की तरक्की के लिये उनको कैसे जोड़ा जा सकता है। आज हर विचारक, उनके जैसे विचारक, आन्दोलन के प्रणेता, इतने प्रकाण्ड विद्वान और पंडित तथा महानायक तथा संसदीय प्रणाली के एक महान ज्ञाता के देश से चले जाने पर पूरे देश और पूरे प्रदेश के साथ दुखी हैं। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चम्पा लिमये भी महान समाजसेवी और विद्वान हैं। मधुलिमये जी के विकास और उनको आगे ले जाने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है उन तक हमारी संवेदना को और सदन की संवेदना को आप पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, भूतपूर्व राज्यपाल श्री महिपाल शास्त्री जी का भी निधन हो गया है। हमने और उन्होंने साथ-साथ काम किया है। वह विधान परिषद् के सदस्य भी रहे। चौधरी चरण सिंह के निकट रहने का उनको बहुत मौका मिला। वह विधान परिषद् के विरोधी दल के नेता भी रहे हैं। स्वर्गीय बनारसी दास जी के मुख्य मंत्रित्व काल में वह राज्य मंत्री थे और उसके बाद गुजरात के राज्यपाल भी रहे। उन्होंने अपने सारे जीवन में हमेशा किसानों, गरीबों और दलितों के हितों के लिये काम किया। शिक्षा संस्थाओं से भी जुड़े रहे, वहां वह प्रवक्ता और प्रिंसिपल भी रहे थे। गांव में खेत खलिहानों से लेकर स्कूल कालेजों तक हर जगह वह गरीबों और किसानों को ऊपर उठाने का काम करते थे। जब वह हमारे बीच नहीं रहे, उनका निधन हो गया है। इससे हम सब लोग दुखी हैं। हमने अपने प्रदेश के महान नेता को खो दिया है। हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप उनके परिवार तक हमारी और सदन की भावनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

नेता विरोधी दल (श्री कल्याण सिंह)-

श्रीमन्, स्वर्गीय आदरणीय ज्ञानी जैल सिंह, स्वर्गीय श्री आदरणीय मधु लिमये जी, स्वर्गीय महीपाल सिंह जी शास्त्री के वेदना भरे निधन के संबंध में जो शोकोद्गार माननीय नेता सदन ने व्यक्त किये हैं, मैं अपने को और अपने दल को उससे सम्बद्ध

करता हूं। श्रीमन्, यह तीनों ही महान् व्यक्ति थे और तीनों का महान् व्यक्तित्व था। ये देश की आजादी में अग्रिम भूमिका निभाने वाले लोग रहे। आज हम स्वतंत्र हैं, इसलिये अन्य के साथ इन तीन भारी पुरुषों का महान् योगदान रहा है। इसके लिये न केवल भारत की वर्तमान पीढ़ी, बल्कि भावी पीढ़ियां भी स्वतंत्रता आन्दोलन में उनके योगदान के लिये और देश की आजादी दिलाने के लिये सदैव ऋणी रहेगी। पुराने बड़े बड़े व्यक्तित्व एक-एक करके हमारे बीच से उठते जा रहे हैं, यह बहुत दुखद है। आज जब नैतिक मूल्यों का सार्वजनिक जीवन में ह्रास होना प्रारम्भ हो गया है ऐसी विषम और विकराल परिस्थितियों में इस प्रकार की महान विभूतियों का उठ जाना बड़े दुख की बात है। ऐसे व्यक्तित्व उन्होंने सार्वजनिक जीवन में सदा सुचिता पर जोर दिया, सदाचार पर जोर दिया। जो कहना है वही करना है, कथनी और करनी के अन्तर को मिटाया। एक प्रकार से साधना और तपस्वी का जीवन जीकर दिखा दिया जिससे देश को आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली। मान्यवर, आज इन महान व्यक्तियों के न होने से हम सब दुखी हैं परन्तु विधि के विधान के समक्ष हम सब विवश हैं, हम कुछ कर नहीं सकते। उनके प्रति बड़े सम्मान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं और अपने मन के गहरे दुख को व्यक्त कर सकते हैं। श्रीमन्, स्वर्गीय श्री ज्ञानी जैल सिंह ने अपने जीवन में यह प्रमाणित कर दिखाया कि व्यक्ति प्रमाणितकता के अनुसार, अध्यवसाय के साथ ईमानदारी के साथ सार्वजनिक क्षेत्र में सेवा का काम करे तो छोटे से घर में पैदा होने के बावजूद वह बड़े से बड़े पद पर पहुंच सकता है। ज्ञानी जी किसान परिवार में पैदा हुये और खेत की मेड़ों से चलकर भारत के सर्वोच्च पद को सुशोभित किया। यह हमारे लिये वास्तव में बड़ी प्रेरणा प्रदान करने वाली बात है। भिन्न-भिन्न पदों पर रहकर उन्होंने अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। मजदूरों के लिये, किसानों के लिये उनके मन में सहानूभूति थी और उसी के आधार पर उन्होंने समाज की सेवा की और सराहनीय कार्य करके दिखाये। ऐसा महान व्यक्तित्व उठ जाता है तो उस शून्य की भरपाई कोई आसान काम नहीं है। वह स्वभाव से बड़े ही मृदुभाषी परन्तु निर्णय लेने में बड़े दृढ़ थे मुझे अनेक अवसरों पर विभिन्न समस्याओं को लेकर विभिन्न शिष्ट मण्डलों के साथ उनसे मिलने का सौभाग्य मिला। अपने तनावमुक्त व मधुर व्यवहार द्वारा बहुत ही विनोदी वायुमण्डल में समस्याओं का समाधान करने की उनमें क्षमता थी। समय-समय पर उन्होंने सामयिक निर्णय लेकर हमारे लिये और हमारे इतिहास के लिये अमूल्य ख्याति बनाई। श्रीमन्, आदरणीय ज्ञानी जैल सिंह जी के रूप में देश ने एक महान स्वतंत्रता सेनानी खो दिया और कठिनाइयों के समय में देश को आगे बढ़ाने वाला एक समाजसेवी खो दिया है जिन्होंने सर्वप्रथम नैतिक मूल्यों पर बल दिया। मैं अपने और अपने दल की ओर से स्वर्गीय आदरणीय ज्ञानी जी के प्रति

बड़े सम्मान के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे यह प्रार्थना करता हूं कि मेरे और मेरे दल की तरफ से शोक सम्वेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने का कष्ट करें ।

श्रीमन्, उसी कड़ी में दूसरा व्यक्तित्व आता है आदरणीय मधुलिमये जी का । विपन्नों का पक्ष श्री लिमये जी का पक्ष था । श्री लिमये मौलिक चिन्तक थे, मौलिक विचारक थे उन्होंने सिद्धान्तों के साथ कभी समझौता नहीं किया । कोई उनकी बात से सहमत होता हो या न होता हो लेकिन तर्कशक्ति का सभी लोहा मानते थे । इसमें कोई सन्देह नहीं है । भारत के राजनीतिक जीवन में भारत के सामाजिक जीवन में और भारत के आर्थिक चिन्तन में आदरणीय लिमये जी का भारी योगदान है आगे की पीढ़ियां भी लिमये जी के प्रति ऋणी रहेंगी उन्होंने गरीबों के दुख दर्द को समझा, चाहे लेखनी के माध्यम से, वक्तव्यों के माध्यम से, आन्दोलन के माध्यम से, जो भी माध्यम मिला उन्होंने गरीबों की पीड़ा को मुखरित किया । आज एक ऐसे महानुभाव हमारे बीच से उठ गये जिसकी शून्य भर भी भरपाई कठिन है । दूसरी कड़ी महीपाल सिंह शास्त्री जी की है वह किसानों के हितों की लड़ाई लड़ने वाले, मृदुभाषी, व्यवहार कुशल थे । जहां स्वर्गीय ज्ञानी जी के निधन से पूरे राष्ट्र को आघात लगा है, आदरणीय लिमये जी के निधन से राष्ट्र को आघात लगा है वहीं आदरणीय शास्त्री जी के निधन से पूरे राष्ट्र को आघात लगा है । आदरणीय शास्त्री जी के निधन से हमारे प्रदेश की महान क्षति हुई है और आघात लगा है । तीन-तीन महान विभूतियां हमारे बीच से उठ गई हैं । हम सभी इन नेताओं के निधन से दुखी हैं । हमारी पुनः प्रार्थना है कि उनके शोक संतप्त परिवार को हमारी और हमारे दल की संवेदनायें भेजने की कृपा करें ।

पंचायती राज मंत्री (श्री राम लखन वर्मा)-

श्रीमन्, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी, स्वर्गीय मधु लिमये और भूतपूर्व राज्यपाल महीपाल शास्त्री जी के प्रति जो शोक संवेदनायें माननीय नेता सदन, माननीय नेता विपक्षी दल ने व्यक्त की उनमें मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं । यह तीनों महान विभूतियां हमारे बीच में नहीं हैं । भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जो एक दुर्घटना में घायल हुये और काफी अरसे के बाद उनकी मृत्यु हो गई । उनकी उम्र 78 वर्ष की थी । उन्होंने अपने जीवनकाल में जुर्म, जाति, अत्याचार की लड़ाई लड़ी । उनका जीवनकाल अपने में अनोखी चीज है । सबसे बड़ी बात यह थी कि वह एक अच्छे देशभक्त और स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे । उन्होंने देश की आजादी में बढ़ चढ़कर भाग लिया । एक साधारण कृषक परिवार के घर जन्म लेकर वह जिस हैसियत पर पहुंचे वह किसानों के लिये गर्व की बात है । स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह जी हमारे बीच नहीं हैं हमने देश के महान नेता को खो दिया है आज वह हमारे साथ नहीं हैं लेकिन उनकी विचारधारायें हमारे साथ हैं । उनके जो मार्गदर्शन हैं वह हमारे बीच मौजूद है । उनके प्रति हमारी सच्ची

श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके बताये रास्तों पर चलें, उनसे सीखें। उन्होंने जुर्म, जाति और अत्याचार के खिलाफ संघर्ष करके ऐसी जगह बनाई जो सभी के लिये अनुकरणीय है। मैं अपनी तरफ से अपने दल की तरफ से आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके शोकाकुल परिवार तक शोक संवेदना भेजने की कृपा करें। उन्हीं की कड़ी में स्व0 मधुलिमये जी का नाम आता है जो समाजवादी विचारधारा के थे। आज इस देश और प्रदेश में ऐसे लोगों की जरूरत थी लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि वह हमारे बीच नहीं रहे। समाज में जो कुरीतियां हैं, ऊंच-नीच की खाईं है उसके लिये वह हमेशा संघर्षरत रहे और इसके लिये लड़ाई लड़ते रहे। देश में और प्रदेश मे सबको बराबर हक, हिस्सा और अधिकार मिले। इसके लिये वह हमेशा समाजवादी विचारधारा पर चलते रहे और समाज को एक दिशा निर्देश दिया आज वह हमारे बीच नहीं रहे हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी तरफ से मेरे दल की तरफ से उनके शोकाकुल परिवार तक शोक संवेदना भेजने की कृपा करें।

श्रीमन्, इसी क्रम में स्व0 महीपाल शास्त्री जी का नाम आता है जो राज्यपाल भी रहे उनका निधन हो चुका है। वह सच्चे देशभक्त, स्वतंत्रता सेनानी, गरीबों के मसीहा थे। वह किसानों और गरीबों के लोकप्रिय नेता थे। आज उनके निधन पर जो शोक संवेदना व्यक्त की जा रही है मैं उसमे अपने और अपने दल को सम्बद्ध करते हुये आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार तक मेरी शोक संवेदना भेजने की कृपा करें।

श्री प्रमोद तिवारी-

अध्यक्ष महोदय, भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के बारे में सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि उनके जीवन का सफर एक किसान परिवार के बेटे के सफर से शुरू होकर भारत के प्रथम नागरिक बनने तक का सफर है। जो कि त्याग और आदर्शों से भरा पड़ा है। उन्होंने सर्वोच्च आसन पर बैठकर सारी दुनिया को यह दिखा दिया कि भारत के लोकतंत्र की यही विशेषता है। यहां सर्वोच्च पद पर एक साधारण किसान का बेटा भी पहुंच सकता है। यह करके उन्होंने लोगों के दिलों में सम्मान पैदा किया। वह अल्पआयु में ही स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े थे। पहले उन्होंने रियासतों के महराजाओं के खिलाफ ।। वर्ष की आयु में ही आन्दोलन किया था। उसमें उन्हें सजा दी गई। बाद में ब्रिटिश सरकार के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में ख्याति पायी। उन्हें ज्ञानी जी की डिग्री मिली थी उन्होंने धर्म का प्रचार भी किया। उसी के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य के रूप में, प्रदेश के महामंत्री के रूप में, उसके अध्यक्ष के रूप में जनता की सेवा की। आज पंजाब का जो रूप दिखाई पड़ता है, जो सुख शान्ति और समृद्धि दिखाई पड़ती है उसके लिये उन्होंने अथक प्रयास किया। आज का पंजाब उनके उसी प्रयास की देन है। गृहमंत्री के रूप में, उसके बाद भारत के राष्ट्रपति के रूप में उन्होंने अपने अदम्य योग्यता का परिचय दिया और यह साबित कर

दिया कि एक साधारण परिवार में जन्म लेने के बाद, डिग्रियां न प्राप्त होने के बावजूद उनके संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में कहीं भी कमी नहीं आई। उनका निधन भी जिन परिस्थितियों में हुआ वह दुखद है। वह एक दीक्षान्त समारोह से लौटकर आ रहे थे अपने जीवन का अन्तिम कार्य भी उन्होंने शिक्षा और कृषि को समर्पित किया। मैं अपने और अपने दल की तरफ से इस महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कुशल प्रशासक और कांग्रेस के कर्मठ सपूत को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरे इन शोकोद्गारों को उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। गोवा मुक्ति के नायक, समाजवादी विचारधारा के महान प्रणेता स्वर्गीय मधुलिमये समाजवादी परिवार के एक ऐसे नक्षत्र के समान थे, जिसका प्रकाश दशकों तक बना रहेगा। मैंने अपने जीवन में इतने समाजवादी विचारधारा का चिन्तक, लेखक और समाज के प्रति समर्पित व्यक्ति को नहीं देखा। मधुलिमये जी ने पदों का कभी मोह नहीं किया और न वे सत्ता की राजनीति में आये। मान्यवर, उनके निधन से हमारे देश ने ही नहीं दुनिया ने एक समाजवादी नेता को खो दिया है मैं उनके प्रति अपने व अपने दल की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार तक हमारी संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, महीपाल सिंह शास्त्री जो हमारे साथी विधान परिषद् के सदस्य थे तब से मैं उनको जानता हूं। उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी पिछड़े वर्ग के संयोजक के रूप में पिछड़े वर्ग के लिये उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया। सादगी उनके जीवन का अभिन्न अंग थी। मान्यवर, विधान परिषद् में जब वह बोलते थे तो गरीबों की आवाज के रूप में बोलते थे, उनकी बात करते थे और आमतौर से पिछड़े वर्ग के कल्याण के लिये वह जीवन भर संघर्ष करते रहे। 1989 में जब जनता दल की सरकार बनी केन्द्र में, तो उनकी योग्यता को देखते हुये, उनकी प्रशासनिक क्षमता को देखते हुये उन्हें गुजरात जैसे महत्वपूर्ण प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया। उसके बाद मान्यवर, जब दूसरी सरकार बनी, तो उन्होंने उच्च परम्पराओं का निर्वहन करते हुये कुछ दिन बाद अपने पद से त्याग पत्र दे दिया, जो बहुत कम देखने को मिलता है। मैं अपनी ओर से और अपने दल की ओर से उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और आपसे प्रार्थना करता हूं कि हमारी शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री किरन पाल सिंह -

माननीय अध्यक्ष जी, आदरणीय श्री ज्ञानी जैल सिंह, भूतपूर्व राष्ट्रपति, भारतवर्ष, आदरणीय मधुलिमये, आदरणीय श्री महीपाल सिंह शास्त्री जी के निधन पर शोकोद्गार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता ब0स0पा0, माननीय नेता कांग्रेस (आई) ने व्यक्त किये हैं, उससे मैं अपने दल और अपने आप को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह जी फरीदकोट जिले में एक गरीब परिवार में जन्मे और वह इस देश के सर्वोच्च पद तक, सर्वोच्च शिखर तक पहुंचे। मान्यवर, ऐसी मिसाल बहुत कम मिलती है कि ऐसा व्यक्ति जो एक छोटे परिवार में पैदा हुआ हो देश के सबसे ऊंचे पद पर पहुंचे। ज्ञानी जैल सिंह जी राष्ट्रप्रेमी और ईमानदार थे। यह उनकी लगन और निष्ठा का द्योतक है कि वह देश के सवोच्च पद पर पहुंचे। वह बहुत ही छोटी उम्र में आजादी की लड़ाई में कूद पड़े थे इसी कारण से उनकी बड़ी शिक्षा नहीं हो सकी और उन्होंने "ज्ञानी" की धार्मिक डिग्री ली और उनको देश ज्ञानी जी कहने लगा। मान्यवर, मैंने उनके निधन के समय अखबारों में पढ़ा था कि जब वह 10-11 साल की उम्र में थे तो वह जेल गये और पहले उनका नाम गुरुनाम सिंह था। जेल में उनके साथी और वरिष्ठ लोग उनको जैल सिंह कहने लगे थे और आगे चलकर उनका नाम जैल सिंह पड़ा। बाद में वह ज्ञानी जैल सिंह कहलाये और देश के सबसे बड़े पद पर पहुंचे। वह गृह मंत्री रहे हों या राष्ट्रपति रहे हों या पंजाब सरकार के मुख्य मंत्री रहे हों, देश में विभिन्न पदों पर रहते हुये उन्होंने अपनी योग्यता और कार्य कुशलता से एक अनूठी छाप छोड़ी। मान्यवर, राष्ट्रपति पद पर उन्होंने कार्यकुशलता से कार्य किया और अपने पद के दायेत्वों का निवाह किया और राष्ट्रपति पद छोड़ने के बाद, रिटायर होने के बाद वह समाज की सेवा में जुड़े रहे। मान्यवर, इतने बड़े पद पर रहने के बाद कोई व्यक्ति आम सामाजिक कार्यक्रमों में जाय और छोटी-छोटी जगहों पर जाकर दिलचस्पी से सामाजिक कार्यक्रमों में भाग ले यह उसकी महानता का द्योतक है। जैसा कि माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा वह देश की भाषाओं के समर्थक थे। दिल्ली में पार्क के पास धरती पर बैठकर कार्यक्रम में हिस्सा लेना उनके देश प्रेम का द्योतक तो था ही, सर्वोच्च पद से हटने के बाद ऐसे कार्यक्रमों में भाग लेना उनकी जनप्रियता का द्योतक था। जब तक वह देश में रहे और इस संसार में रहे एक एक पल देश के लिये भारतीयों के लिये गरीबों के सम्मान के लिये उन्होंने व्यतीत किया। एक दुर्घटना में वह घायल हो गये और लगभग डेढ़ पखवाड़े तक वह अस्पताल में भर्ती रहे। मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारों, मन्दिरों में उनके जीवन के लिये प्रार्थनायें की गयीं। डाक्टरों ने उनके जीवन को बचाने का अथक प्रयास किया लेकिन वह बचाये नहीं जा सके। ऐसी महान विभूति के देश से चले जाने से हम सभी को बहुत दुख है। हम आपसे विनम्र निवेदन करते हैं कि आप मेरे और मेरे दल की तरफ से ज्ञानी जी के परिवार तक हमारी संवेदनाओं को पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, स्वर्गीय मधुलिमये जी राजनीति में रहे लेकिन यदि सही मायने में देखा जाय तो वह एक सन्त थे। मेरा उनसे घनिष्ठ परिचय तो था नहीं लेकिन कई बार उनसे मिलने का मौका मिला। जब भी मैं उनके पास बैठा तो मुझे ऐसा

लगा कि जैसे किसी सन्त के पास मैं बैठा हूं। जब मैं उनके घर जाता था तो ऐसा लगता था कि मैं एक संसार की लाइब्रेरी में जा बैठा हूं। वह एक महान विचारक थे। वह एक सच्चे देशभक्त थे। वह एक कुशल सामाजिक, राजनीतिक टीकाकार थे। आज के युग के महानतम् व्यक्ति वह थे। उनके निधन से देश ने एक ऐसा व्यक्ति खो दिया जिसने देश के लिये बलिदान तो किया, अपने जीवन को देश के लिये लगाया पर उसका कोई बदला नहीं लिया। गोवा मुक्ति आंदोलन मधुलिमये के के नाम के बिना अधूरा है। गोवा आजाद हुआ, 20 महीनों में मुक्त हो गया। इतने त्याग और इतनी तपस्या के बाद, देश के प्रति कुरबानी देने के बाद शायद मधुलिमये ही ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने अपने त्याग और बलिदान का कोई बदला नहीं लिया। मान्यवर, अपने हूनर पर कायम रहे और देश की सेवा करते रहे। ऐसे समाजसेवी, ऐसे समाजवादी विचारक और ऐसे संत को मैं नमन करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके शोक संतप्त परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

स्वर्गीय महीपाल सिंह शास्त्री विधान परिषद् के सदस्य रहे। जब स्वर्गीय चरण सिंह ने एक नये दल की स्थापना की थी, उस समय शास्त्री जी उसके संस्थापक सदस्य थे। वह चौधरी साहब के साथ बहुत दिनों तक रहे। वह विधान परिषद् में नेता विरोधी दल भी रहे। वह सदैव गरीबों, किसानों और दलितों की आवाज उठाते रहे और अपनी योग्यता के आधार पर देश के एक बड़े प्रदेश गुजरात के वह राज्यपाल भी रहे। उनके जीवन से हमको सबक लेना चाहिये। मान्यवर, मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की शोक संवेदनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

श्री ऊदल-

मान्यवर, भूतपूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह के निधन के संबंध में जो विचार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल और अन्य माननीय नेताओं ने व्यक्त किये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं।

मान्यवर, जैसा लोगों ने कहा, ज्ञानी जी एक साधारण किसान परिवार में पैदा हुये थे और भारत के सर्वोच्च पद पर बैठे। यह उनके त्याग का परिणाम है कि वह इतने उच्च पद पर बैठे और उसको सुशोभित किया। मान्यवर, वह अपने विचारों से दबते नहीं थे। बहुत से ऐसे मौके आये जब राष्ट्रपति पर रहते हुये उन्होंने अपने विचारों को सामने रखा और उसके अनुसार ही कार्य किया। राष्ट्रपति पद से हटने के बाद भी उन्होंने सामाजिक कार्यों में हमेशा रुचि ली और आखिर में वह सामाजिक कार्य में ही गये थे, जहां पर उनकी एक दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। वह हमारे देश के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और उच्च विचारकों में से थे।

वह प्रतिभा के धनी थे। ऐसे व्यक्ति के उठ जाने से हमारे देश और समाज को बहुत बड़ा नुकसान हुआ है। मेरी आपसे प्रार्थना है कि मेरी और मेरे दल की शोक भावनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, दूसरे महान विचारक, महान समाजसेवी नेता और महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मधुलेमये जी के निधन से हम सभी लोगों को बहुत बड़ा धक्का लगा है। उनके संबंध में जो विचार अभी सदन में व्यक्त किये गये हैं, मैं उनसे अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। उनकी मृत्यु के बाद उनका एक लेख प्रकाशित हुआ था, उसको पढ़ने के बाद हमें उनके बहुत से विचार मालूम हुये। ऐसे विचारकों से लोगों को प्रेरणा लेनी चाहिये। आज नैतिक मूल्यों में गिरावट आयी है, राजनीतिक जीवन में गिरावट आयी है और सामाजिक जीवन में गिरावट आयी है, ऐसी स्थिति में अगर हम उनसे प्रेरणा लेते रहे, तो यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं समझता हूं कि दुनिया भर में समाजसेवी विचारकों को उनकी मृत्यु से बहुत दुख हुआ है और ऐसे व्यक्ति के स्थान की पूर्ति हो पाना सम्भव नहीं है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मेरी और मेरे दल की शोक भावनायें उनके परिवार तक पहुंचाने की कृपा करें। मान्यवर, महीपाल शास्त्री जी भी महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, महान देशभक्त और सादा जीवन उच्च विचार के व्यक्ति थे। मेरी उनसे पहले भी मुलाकात थी। संयोग से पिछले मई में मैं बिमार होकर बलरामपुर हास्पिटल में था जहां वह भी बिमार होकर पड़े थे और चल फिर रहे थे। जब उनको पता चला कि मैं यहां भर्ती हूं तो बेचारे अपने कमरे से उतर कर मिलने आये और हालचाल पूछा, तो सादगी के वह प्रतीक थे। ऐसे महान विचारक और महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और महान देशभक्त के उठ जाने से हमारे प्रदेश का बहुत बड़ा आहेत हुआ है। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मेरी ओर से और मेरे दल की ओर से उनके शोकसंतप्त परिवार तक संवेदना पहुंचाने की कृपा करें।

श्री राम स्वरूप-

मान्यवर, स्वर्गीय श्री ज्ञानी जैल सिंह जी के विषय में जो नेता सदन, नेता विपक्ष और सभी राजनीतिक दलों के नेताओं ने शोकोद्गार व्यक्त किये हैं उनसे मैं अपने को और अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, ज्ञानी जैल सिंह जी देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में पंजाब के सरजमीं पर एक बहादुर सेनानी के रूप में उभरे थे, उन्होंने अंग्रेजों को भगाने में जो संगठन पैदा किया, जो भावनायें पैदा की वह पंजाब के लोगों को प्रेरित करती रहेगी। आप जानते हैं कि उस राष्ट्रीय आन्दोलन में गुलामी की जंजीरों से भगाने के लिये पंजाब के लोगों ने कई सपूत हमारे देश को दिये जिसमें सरदार भगत सिंह, वह भी पंजाब की सरजमीं के थे, तो अधिक न कहते हुये यह कहूंगा कि वह साधारण परिवार में पैदा होकर अपनी बहादुरी अपने कर्तव्यनिष्ठ और अपने जुझारुपन के कारण ही वह उच्चकोटि तक पहुंचे।

उनके आदर्श और उनकी प्रेरणा से हम सब लोग सीखते हुये उनके पद चिन्हों पर चलने का प्रयास करें यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि आप मेरे और मेरे दल की ओर से उनके परिवार और उनके विचारों को जानने वाले लोगों तक हमारी शोकसंवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

मान्यवर, इसके साथ ही हमारे मधुलिमये जी का एक ऐसा नाम है जो जिन्दा हैं और जिन्दा रहेगा, भले उनका शरीर हमारे साथ न हो। इस देश में राष्ट्रीय आन्दोलन में जो मधुलिमये जी का काम रहा है वह देश के उच्च कोटि के राजनीतिज्ञों और समाजसेवियों से कम नहीं है। जो उन्होंने अपनी समाजवादी विचारधारा दी है वह ऐसी विचारधारा है कि अपने समय में जो उनकी पुस्तक लिखी गई, हालांकि कभी उनसे मेरी मुलाकात नहीं हुई, लेकिन समाचारपत्रों के के माध्यम से, जो उन्होंने देश को रास्ता दिखाया आजादी की लड़ाई में और उसके बाद जो संघर्ष दलितों के लिये मजदूरों के लिये किया उसके लिये वह प्रेरणा के श्रोत थे। उनकी पुस्तक मैंने पढ़ी वह समाजवादी आस्था से भरी पड़ी थी उससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। तो मैं अधिक न कहते हुये यह कहूंगा कि उनके लिये भी हमारी सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि जो उनके विचार हैं, जो उनका साहित्य है जो हमारे पास है उस पर हम चलते रहें, काम करते रहें तो यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं आपसे आग्रह करता हूं कि मेरे विचार मेरे श्रद्धासुमन उनके परिवार को, उनके दल और उनसे जुड़े हुये विचारकों तक पहुंचाने की कृपा करें। साथ ही माहेपाल सिंह शास्त्री, जो स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे, जिन्होंने राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान दिया, बड़ी ही सादगी से भरा उनका जीवन था, किसानों मजदूरों के लिये वे सदैव संघर्षरत रहे। उनके क्षेत्र और प्रान्त के लोग उनसे जुड़े हुये थे, उनके साथ मैं भी उनके निधन पर दुख महसूस करता हूं और आपसे आग्रह करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार तक हमारी शोक संवेदनायें पहुंचाने की कृपा करें।

श्री अतीक अहमद-

भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व0 ज्ञानी जैल सिंह जी के निधन पर जो विचार और जो संवेदनायें सदन में व्यक्त की गयी हैं मैं उससे अपने आप को सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, भूतपूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी एक किसान परिवार के थे और माइनारिटी के आदमी थे। बड़े ही सफलतापूर्वक और बड़ी कुशलतापूर्वक उन्होंने उस पद को चलाया और विदेश में भी भारत की गरिमा को बढ़ाया।

इसी कड़ी में एक और महान व्यक्ति समाजवादी नेता और चिन्तक मधु लिमये जी के विषय में सदन में जो भावनायें और शोकोद्गार व्यक्त किये गये हैं, उससे भी मैं अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। इस वर्ष में, जहां देश के नये वर्ष की खुशी मना रहा था, नये वर्ष के अवसर पर देश के सबसे बड़े आदमी का उठ जाना, मैं तो समझता हूं कि हम लोगों के लिये बहुत बड़ा आघात था। जो समाजवादी विचारधारा के लोग हैं उनके लिये उससे बड़ा आघात और कोई नहीं हो सकता है।

मधुलिमये जी बहुत बड़े आदमी थे, हालांकि उनका कोई बहुत बड़ा पद न था और न कद था, लेकिन वे विचारों से अपने सिद्धान्तों से, निश्चय ही, जब उनका देहान्त हुआ, हमारे देश के सबसे महान और सबसे बड़े व्यक्ति थे। समाजवादी विचार रखने वाले इस प्रदेश के मुखिया की भावना और उनकी व्याकुलता को मैं यहां आज महसूस कर रहा था, उन्होंने अपने जो उद्‌गार व्यक्त किये उसमें यह कहा था कि यह उनका सौभाग्य रहा कि उनके अंतिम समय के 2-4 महीने पहले एक घंटे तक मधु लिमये जी से उनकी वार्ता हुई। मुझे आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि ऐसे समाजवादी विचारक और चिन्तक तथा उस महान व्यक्ति के उठ जाने के बाद, जो उनका झंडा है और जो समाजवाद का परचम है, उसको लेकर हमारे समाजवादी नेता और इस प्रदेश के मुख्य मंत्री जी आगे चलते रहेंगे, हमारी शुभकामनायें उनके साथ हैं। मैं उनके परिवार से परिचित नहीं हूं। लेकिन उनकी पत्नी, समाजवादी विचार रखने वाले उनके सहयोगियों और समाजवादी विचार रखने वाले जो अन्य नेतागण हैं उन सभी के शोक के साथ मैं अपने को भी सम्बद्ध करता हूं और आपसे निवेदन करता हूं कि आप उनकी पत्नी और शोकाकुल उनके शुभचिन्तकों तक हमारी भावनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

मान्यवर, महिपाल सिंह शास्त्री जी के निधन पर सदन में जो भावनायें व्यक्त की गई हैं मैं उनसे अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। मान्यवर, महिपाल सिंह शास्त्री जी, जहां तक मैंने सुना और पढ़ा है, चाहे वह संसद सदस्य के रूप में रहे हों चाहे एक कुशल समाजसेवी रहे हों, चाहे एक कुशल राष्ट्रवादी रहे हों, उनका अपना एक व्यक्तित्व था। मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया उनके शोकाकुल परिवार तक मेरी संवेदनायें पहुंचाने का कष्ट करें।

श्री अध्यक्ष-

माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता बसपा, माननीय नेता कांग्रेस, माननीय नेता जनता दल, माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी, माननीय नेता मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी, माननीय नेता निर्दलीय ने जो स्व0 ज्ञानी जैल सिंह जी और मधुलिमये जी तथा महिपाल सिंह शास्त्री जी के प्रति जो विचार व्यक्त किये हैं मैं उससे अपने को सम्बद्ध करता हूं और आगे की कड़ी में यह जोड़ना चाहता हूं कि स्व0 ज्ञानी जी आज हमारे बीच में नहीं हैं उनको एक साधारण किसान से देश की सर्वोच्च कुर्सी राष्ट्रपति तक पहुंचाने के लिये उनकी समाज सेवा ने ही साथ दिया। उन्होंने अगर अंग्रेज साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष न छेड़ा होता, अपनी जवानी को न खपाया होता और सामंतवाद के खिलाफ संघर्ष न किया होता तो वे पंजाब के मुख्य मंत्री और देश के राष्ट्रपति न होते हम सबको उनके जीवन के कृत्यों से यह प्रेरणा लेनी चाहिये कि एक साधारण व्यक्ति भी समाज की सेवा के आधार पर, संघर्ष के आधार पर, सही रास्ते पर चलकर महान बन सकता है। मैं उनके प्रति यह कहना

चाहूंगा कि यही हम सबकी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम शोषकों के खिलाफ, साम्राज्यवाद के खिलाफ गरीबों की मदद करने में अपना जीवन खपायें।

इसी तरह से स्व0 मधु लिमये जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हमारे देश और समाज को नयी विचार धारा दी। अंग्रेजों के खिलाफ तब तक संघर्ष किया जब तक देश आजाद नहीं हो गया। देश आजाद होने के बाद पुर्तगाली उपनिवेशवाद जो गोवा में स्थापित था उसे नष्ट करने में अगुवाई की और 12 वर्ष जेल की सजा काटी। और 19 महीने की जेल काटने के बाद उन्हें मुक्ति मिली। हमारे समाज को जो उन्होंने दिया है, उसके लिये हम सदैव उनके ऋणी रहेंगे। उनके विचार जो उनकी पुस्तकों में निहित है, वह हमारे लिये ही नहीं बल्कि आगे आने वाली पीढ़ी के लिये भी सदैव-सदैव प्रेरणा बनते रहेंगे।

इसके साथ ही मैं स्व0 श्री महिपाल सिंह शास्त्री जी को भी अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये यह कहना चाहूंगा कि शास्त्री जी एक ऐसे समाज में पैदा हुये, जो देश में पिछड़े समाज के रूप में जाना जाता था। उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और महाविद्यालय में प्रधानाचार्य के पद पर रहे। वह चौधरी साहब के अनन्य भक्त थे और पिछड़ा वर्ग संघ के अध्यक्ष भी रहे। वे कृषकों की समस्याओं से सदैव जूझते रहे, आज वह हमारे बीच में नहीं हैं, लेकिन उनके विचारों से, कृतित्व से हमारे बहुत से साथी सबक लेते रहेंगे। मैं स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह, स्वर्गीय श्री मधु लिमये जी, स्वर्गीय श्री महिपाल सिंह शास्त्री जी की दिवंगत आत्माओं के लिये ईश्वर से प्रार्थना करूंगा कि वह उनको शान्ति प्रदान करे और उनके परिवारजनों को धैर्य धारण करने की क्षमता प्रदान करे। इन्हीं शब्दों के साथ एक बार पुनः सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुये हम लोग दो मिनट के लिये मौन खड़े होंगे।

(दिवंगत आत्माओं की शान्ति के लिये सदन ने दो मिनट का मौन रखा गया।)

श्री अध्यक्ष-

अब हम उठते हैं, कल 11.00 बजे पुनः बैठेंगे।

(इसके बाद सदन अपराह्न 1 बजकर 8 मिनट पर अगले दिन के 11.00 बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

लखनऊ :
2 फरवरी, 1995

प्रेम चन्द्र सक्सेना,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

पी0 एस0 यू0 पी0 एल0 328 विधान सभा (528)-1995-813 (ई0टी0)।